Raga of the Month August 2021   Baharanga Ragas

बहार अंगके राग

बहार एक संकीर्ण जाती का राग है। उसके स्वरूप पर बागेश्री, मिया मल्हार और अडाणा रागोंका प्रभाव है। गानसमय के नियमानुसार बहार राग का गान समय मध्यरात्री योग्य है। परंतु वसंत ऋतु मे बहार राग और उसके प्रकार किसी भी समय गाये जाते हैं। आरोहमे रिषभ और अवरोहमे धैवत वर्जित होने से उसकी जाती षाडव षाडव मानी जाती है। इस रागकी प्रकृती चंचल होने के कारण गायक विवादी स्वरोंकाभी प्रयोग कुशलता से करते हैं।

आरोह - नि़ सा $^{\text{म}}$ग म, प ग म, म $^{\text{नि}}$ध, नि सां।

अवरोह - सां, नि प, म प, $^{\text{म}}$ग म रे सा।

विशेष स्वर प्रयोग – पूर्वांग   सा म, म प, $^{\text{म}}$ग म, $^{\text{म}}$ग म रे सा

- उत्तरांग   म $^{\text{नि}}$ध, नि सां, सां नि प

राग बागेश्रीकी स्वरसंगतियोंका प्रयोग बहार मे किया जाता है; जैसे म प, ग म ध, म ध नि रें सां. उसी प्रकार मिया मल्हार की म प ग म $^{\text{नि}}$ध, नि सां और अडाणा की सां नि प म प ग म रे सा ये स्वर-संगतियाँ बहार मे आती है मगर उच्चार भेदसे राग का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। पंडित गिंडेजी ने लेक्चर डेमो मे उच्चार भेद सोदाहरण स्पष्ट किया है।

बहार रागको अन्य रागोंके साथ जोडकर अनेक मिश्र राग निर्माण हुए है; जैसे कि बागेश्री बहार, बसंत-बहार, भैरव बहार, हिंडोल बहार, जौनपुरी बहार , अडाणा बहार, इत्यादी। www.oceanofragas.com संकेत स्थल मे बहारके ३० जोड़ रागोंके ऑडीओ समाविष्ट किये हैं।

आज के ऑडीओ मे हम पंडित गिंडेजी से बहार राग का विवरण, लक्षण गीत सुनेंगे और बहार के दो अप्रचलित प्रकार सुनेंगे- राग गौड बहार और केदार बहार; और अंतमे राग रामकली बहार सुनेंगे जो उस्ताद गुलाम हुसेन शग्गन और उमराव बुन्दू खाँ ने गाया है।

आभार- "रागांग राग विवेचन "- पंडित यशवंत महाले , श्री अजय गिंडे.

०३ -० ८ -२०२१

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles   - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx

Links to Lecture Demonstrations of Raga Bahar

Pandit Debu Choudhauri Lec Dem Raga Bahar

@ https://www.youtube.com/watch?v=Ru0cvDR0PU4